भारत रत्न पं० रविशंकर

'भारत रत्न' पं० रवि शंकर

पंडित रविशंकर का जन्म उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले में सन् 1920 में हुआ था। आपके पिता पं० श्याम शंकर बड़े विद्वान संगीत प्रेमी थे। पं० रवि शंकर ने शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया है। इनके प्रयासों के फलस्वरूप पश्चिमी देशों में भारतीय शास्त्रीय संगीत को काफी सम्मान प्राप्त हुआ। ये एक सितार वादक के साथ भारतीय राष्ट्रीय वाद्य वृंद के संस्थापक भी हैं।

पण्डित रविशंकर को काफी सम्मान प्राप्त है, इन्होंने लगभग छह दशकों के कार्यकाल में अनगिनत पुरस्कार और सम्मान अर्जित किये हैं जिनमें विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त डॉक्टरेट की 14 उपाधियां तथा पद्म भूषण (1967) तीन ग्रेमी-पुरस्कार (1966, 1972, 2001), पद्म विभूषण (1981) मैगसेसे पुरस्कार 1992, भारत रत्न 1999 और फ्रांस का सबसे बड़ा पुरस्कार "कमांडर द ला लीजन द ऑनर अवार्ड" नागरिक सम्मान शामिल है।

उदयशंकर एक प्रसिद्ध नर्त्तक थे जो पण्डित रविशंकर के भाई थे। इन्होंने पहले अपने भाई के साथ-साथ नृत्य मण्डली में शामिल होकर संगीत और नृत्य का अध्ययन किया और भारत व यूरोप की विस्तृत यात्राएं की। 18 वर्ष की आयु में रविशंकर ने नृत्य छोड़कर अगले सात वर्षों तक प्रख्यात संगीतज्ञ अलाउद्दीन खाँ से सितार की शिक्षा प्राप्त की। आपकी गुरुभक्ति, लक्ष्य के प्रति जागरुकता तथा संगीत में आश्चर्यजनक उन्नति को देखकर 1941 में अपनी सुपुत्री अन्नपूर्णा के साथ आपका विवाह कर दिया। 1948 से 1956 तक आल इण्डिया रेडिया में संगीत निर्देशक के पद पर रहने के पश्चात् यूरोपीय देशों तथा अमेरिका की कई यात्राएं की और पाश्चात्य जगत को भारतीय शास्त्रीय संगीत से परिचित कराया। रविशंकर ने सत्यजीत राय की प्रसिद्ध फिल्मों की अप्पू श्रृंखला के लिए सन् 1955 से 1959 तक संगीत रचना की। काबुलीवाला, गोदान, अनुराधा आदि फिल्मो में भी इन्होंने संगीत दिया। 1962 में उन्होंने पहले बम्बई (वर्त्तमान मुंबई) और लॉस एंजेलिस 1967 में किन्नर स्कूल ऑफ म्यूजिक की स्थापना की। वायलिन वादक यहूदी मेनुहिन के साथ संगीत कार्यक्रम में प्रदर्शन और बीटल्स के जार्ज हैरीसन के साथ उनके संबंधों में भारतीय संगीत की और पश्चिम का ध्यान आकर्षित करने में सहायता मिली। 1969 में उनकी आत्मकथा माईलाइफ, माई म्यूजिक प्रकाशित हुई। पण्डित रविशंकर को 1986 में राज्य सभा का सदस्य बनाया गया। पण्डित रविशंकर का देहावसान दिनांक 11दिसम्बर 2012 को हो गया।